SāKet Loka

(This is topmost realm in spiritual space also called as Nitya-Ayodhya, which is the core central part of Goloka or say Nitya-Vaikuntha where Lord Rama and his supreme potency in form of Sita are eternally situated in their eternal-leela.)

Goloka

(Goloka, the supreme abode of Krsna, is also known as eternal Vaikuntha which is eternally self illuminated and it is in form of a great lotus flower, each petal represents different Vaikuntha-regions. The central part of Goloka is known as 'SāKet Loka' or 'eternal Ayodhya' where Lord Rama, Swayam Bhagvan lives in form of a Nitya Kishor with his Para-Shakti Sita.)

Maha-Vaikutha

(The supremely divine abode of Lord Maha-Vishnu and it's the inner central core part is called as 'Rama Puri' i.e. divine city of Rama or Ayodhya. Ayodhya is the core of Vaikuntha or say Goloka.)

Vaikuntha region starts

Satya- Loka, Shiva-Loka and Other divine planets

(where lord Shiva enjoys with his associates and devotees.)

Maha-Vaishnava Loka

Spiritual region starts

Beyond material space there is spiritual space

Material space consisting of infinite universes

अयोध्या धाम परत्व संग्रह

From vedas

अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।

तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।

अथर्ववेद १०.२.३१

अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।

तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो लोको ज्योतिषावृतः।।

तैतरीय अरयणक १.२७.११४

अर्थात – आठ चक्र और नौ द्वारों वाली **अयोध्या** देवों की पुरी है,उसमें प्रकाष वाला कोष है,जो आनन्द और प्रकाश से युक्त है। अयोध्या ऐसी नगरी है जिसे शत्रु जीत न सके।

एतावान् अस्य महिमातो ज्यायाꣳश् च पूरुषः ।

पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपाद् अस्यामृतं दिवि ॥

Yajurveda 31.3

पूरुष एवेदँ सर्वं यद् भुतं यत् च भाव्यम्।

पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपाद् अस्यामृतं दिवि ॥

Sama veda purva archika 7.3.13.4

तावानस्य महिमा ततो ज्यायांश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवीति ॥

Chandogya upanishad ३.१२.६

Tāvānasya mahimā tato jyāyāṃśca pūruṣaḥ | pādo'sya sarvā bhūtāni tripādasyāmṛtaṃ divīti || 3.12.6 ||

6. Its glory is like this. But the glory of the puruṣa [i.e., Brahman, who fills the whole world] is still greater. All creatures constitute one quarter of him. The remaining three quarters are nectar in heaven.

अमृतनादोपनिषत्प्रतिपाद्यं पराक्षरम् ।
त्रैपदानन्दसाम्राज्यं हृदि मे भातु सन्ततम् ॥

Amritnada upanishad

Tripad vibhuti is full of bliss.

परमहंसोपनिषत् वेद्यापार सुखाकृतिः।

त्रैपाद् श्रीरामतत्वं स्वमात्रं इति चिन्तये।।

Paramhansh upanishad

Tripadvibhuti is governed by shri Ram as all of tatvas in tripad vibhuti are shri ramtatva

अमृतबिन्दु उपनिषद् वेद्यं यत् परम अक्षरम्।
तद् एव त्रिपाद् रामचन्द्राख्यं नः परागतिः।।

Amritbindu upanishad

Lord of Tripadvibhuti Shri Ramchandra is our greatest destination (gatih)

योगैश्वर्यं च कैवल्यं जायते यत्प्रसादतः ।
तद्वैष्णवं योगतत्त्वं रामचन्द्रपदं भजे ॥

Yogatatva upanishad

Highest vaishnav tatva is feet of Shri Ram

यन्महावाक्यसिद्धान्तमहाविद्याकलेवरम् ।

विकलेवरकैवल्यं रामचन्द्रपदं भजे ॥

Maha vakya upanishad

All of the vedic Maha vakyas are meant for Shri Ramchandra

बह्वृचाख्यब्रह्मविद्यामहाखण्डार्थवैभवम् ।

अखण्डानन्दसाम्राज्यं रामचन्द्रपदं भजे ॥

बह्वृचोपनिषत्

Tripad vibhuti is kingdom of unlimited bliss.

बाह्यान्तस्तारकाकारं व्योमपंचक विग्रहम्।

राजयोगैक संसद्धिं रामचन्द्रपदं भजे।।

मण्डल ब्रह्माण उपनिषद

पंच परमव्योम ही पंच वैकुंठ कहे जाते हैं।इन पंच वैकुंठो के भगवान श्रीराम तारक ब्रह्माख्य राजयोक एक सिद्धि स्वरुप है

तमसस्तु परं ज्योति परमानन्द लक्षणम्।

पाद त्रयात्मकं ब्रह्म कैवल्यं शाश्वतं परम्।।

अथर्वण पुर्वखंड

जो तुम से परे है, जो परम ज्योति है जो परमानन्द स्वरुप है, नित्य शाश्वत, पाद त्रयात्मक, महा कैवल्य है।

त्रिपाद् विभुति वैकुंठ स्थानं तद् एव परमसाकेत महाकैवल्यं।

अथर्वण श्रुति त्रिपाद् विभुति महानारायण उपनिषद्

त्रिपाद् विभुति दिव्य स्थान है वही साकेत , महाकैवल्य है।

मोक्षलक्षणं पादत्रये वर्तते। तस्मात् पादत्रयं परम मोक्षः। पादत्रयं परमवैकुंठः पादत्रयं परमकैवल्यम् इति।

अथर्वण श्रुति त्रिपाद् विभुति महानारायण उपनिषद्

जो त्रिपाद् विभुति है वहीं परम मोक्ष है वहीं परम वैकुंठ है इत्यादि।

ॐ याऽयोध्या सा सर्वबैकुण्ठानामेव मूलाधारा प्रकृतेः परा तत्सद् ब्रह्ममयी विरजोत्तरा दिव्यरत्नकोशाढ्या तस्या नित्यमेव श्रीसीतारामयोर्विहारस्थलमस्ति।।

Atharvavedā Shrüti Ram Rahashya Upnishad Uttarkhañd)

Ayodhya, which is beyond nature, true form, Brahmamayi, is also the foundation of all the Vaikunth worlds. Rivers like Virja emerge in its north. And Shri Sitaram ji's place of residence is

always present in the Kosh (Mandap) decorated with divine gems

प्रकृति से परे, सच्चिदानन्दस्वरूप, ब्रह्ममयी अयोध्या समस्त वैकुण्ठ लोकों का स्रोत है। इसके उत्तर में विरजा जैसी नदियाँ निकलती हैं। और श्रीसीताराम जी का निवास स्थान दिव्य रत्नों से सुसज्जित कोष (मंडप) में सदैव विद्यमान रहता है

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।

तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥

Mandukopnoshad 2.2.11

There the sun shines not and the moon has no splendor and the stars are blind; there these lightnings flash not, how then shall burn this earthly fire? All that shines is but the shadow of His shining; all this universe is effulgent with His light.

वहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं रहता, चन्द्रमा का तेज नहीं रहता और तारे अन्धे हो जाते हैं; वहाँ ये बिजलियाँ नहीं चमकतीं, फिर यह सांसारिक अग्नि कैसे जलेगी? जो कुछ भी चमकता है वह उसकी चमक की छाया मात्र है; यह समस्त ब्रह्माण्ड उन्हीं के प्रकाश से दीप्तिमान है।

1.20.22 : **तद् विष्णुः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूर्यः दिविव चक्षुर अतातमः**

(इसमें) यह सर्वव्यापी सर्वोच्च स्थिति, आत्मा हमेशा देखी जाती है, जैसे कि स्वर्ग हर चीज़ को देखता है।

परात्परस्य श्रीरामनाम्नः सर्वेषाम् नारायणादीनां नामानि भवन्ति तस्य धाम्नः तेषां धामान् यत् उत्पद्यन्ते।

विश्वम्भर उपनिषद

श्रीराम नाम से समस्त नारायण नाम उत्पन्न हुए हैं और उनके साकेत धाम से समस्त धाम (महा वैकुंठ, रमा वैकुंठ, गोलोक आदि) उत्पन्न हुए हैं।

<u>From Puranas</u>
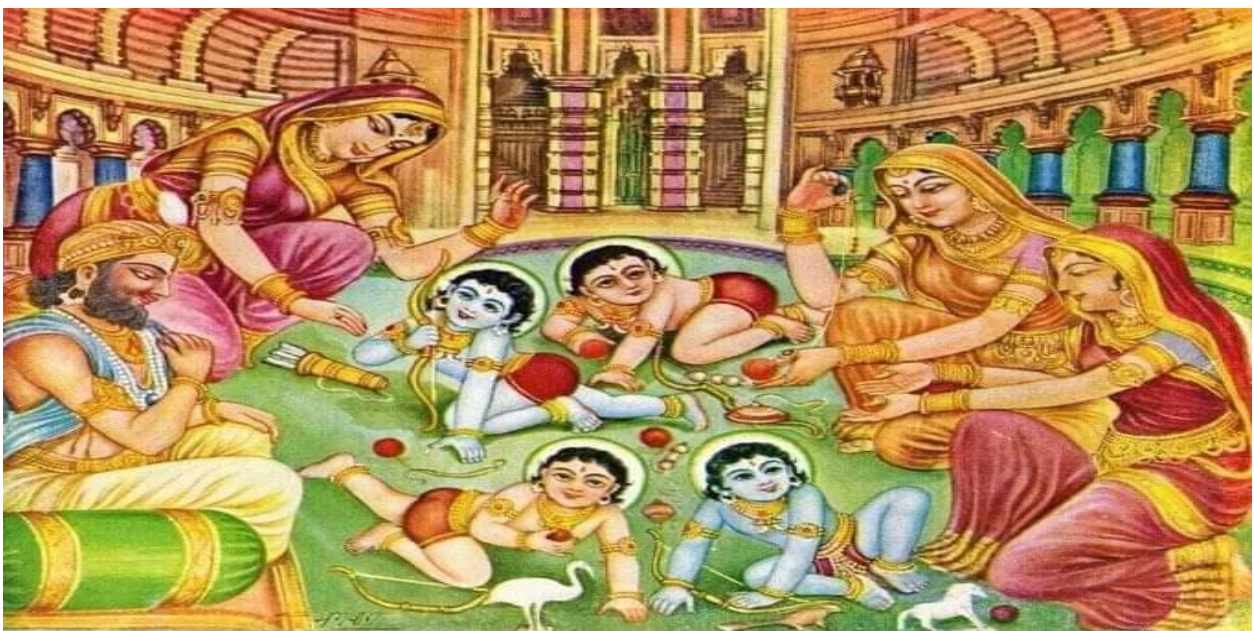
मथुराद्याः पुरी सर्वा अयोध्यापुरदासिकाः ।
अयोध्यामेव सेवन्ते प्रलयेऽप्रलयेऽपि वा ॥

(Padma Puran)

Mathura etc. all Purias are maidservants of Śrī Ayodhyā Puri. These Puris serve Ayodhyā ji with servility on both the occasions of doomsday and creation

मथुरा आदि सभी पुरियाँ श्रीअयोध्यापुरी की दासियाँ हैं। ये पुरियाँ प्रलय और सृष्टि दोनों अवसरों पर अयोध्याजी की सेवा करती हैं

त्रिपाद् विभुतिर्नित्या स्याद् अनित्या पाद् ऐश्वर्यं।
त्रिपाद् व्याप्ति परे धाम्नि पादोस्येह भवेत् पुनः।।

पद्मपुराणम ६.२२७.१५

त्रिपाद् विभुति नित्य शाश्वत है और एक पाद विभुति अनित्य है। त्रिपाद् विभुति ही परम धाम है।

त्रिपाद् विभुतिरुपं तु श्रुणु भुधर नन्दिनी।
प्रधानपरमे व्योमनोरन्तरे विरजा नदी।।
वेदांग स्वेद जनिता तोयैः परस्राविता शुभा।

तस्याः पारे परे व्योम्नि त्रिपाद्विभुति सनातनी।।
अमृतं शाश्वतं नित्यं अनन्तं परम पदम्।
निःश्रेयसञ्च निर्वाणमयं मोक्षम् उच्यते।।

पद्म पुराण ६.२२७.५८-६१

शंकर भगवान जी का वचनः- हे पार्वती! त्रिपाद् विभुति का स्वरूप सुनो, प्रधान (मायामयनश्वर जगत्) और पर व्योम (नित्य चिन्मय प्रभु धाम) दोनों के बीच विरजा नदी है। वेदांगस्वेद के प्रवाहित ज्ञानमय जल से परिपुर्ण है। उसके दुसरे तट पर दिव्य सनातनी लोक है उसको ही शाश्वत, अमृत, अनंत, परम पद बोला जाता है। उस त्रिपाद् विभुति के भगवान श्री राम है।

तद् विष्णोः परमं धाम यान्ति ब्रह्मसुखप्रदम्।
नानाजन पदाकीर्णं वैकुंठम् तद् हरे पदम्।।
प्राकारैश्च विमानैश्च सौंधे रत्नमयैर्वृतम्।
तन् मध्ये नगरी दिव्या सायोध्या प्रकीर्तिता।।

पद्मपुराणम उत्तरखंड २२८.१०-११

उस विष्णु का परम धाम है वहीं विष्णु का पद वैकुंठ है उसके मध्य में अयोध्या नाम का नगरी है।

परव्योम्नि यथा लीनो देवतैः कमलापतिः।

तथा नृपवरः श्रीमन् साकेते शुशुभेतदा।।

पद्मपुराणम ६.२४३.१७

जैसे परव्योम में श्रीभगवान देवताओं से घिरे हुए रहते हैं ठीक वैसे ही राजाओं में सर्वश्रेष्ठ भगवान श्री राम साकेत में शोभामान है।

दुर्लभं योगिनां नित्यं स्थानं साकेतसंज्ञकम्।

सुखपुर्वं लभेत् तत् तु नामसंराधनात् प्रिये।।

पद्मपुराणम

शंकर भगवान कहते हैं:- हे प्रिये ! नित्य साकेत धाम जो योगियों के लिए भी दुर्लभ है, रामनाम जापक सहजता से उस परम धाम को प्राप्त कर लेता है।

सर्वपापविनिर्मुक्ता नाममात्रैक जल्पकाः।

जानकीवल्लभस्यासि धाम्नि गच्छन्ति सादरम्।।

पद्मपुराणम

केवल रामनाम के जापक ही सारे पापों से मुक्त होकर जानकीवल्लभ सरकार का नित्य साकेत धाम को प्राप्त कर लेते हैं।

विष्णोः पादम् अवंतिका गुणवतीं मध्ये च कांचीपुरी।

नाभौद्वारवतीं पठंति हृदये मायापुरी योगिनाः।।

ग्रीवमुलमुदाहरंति मथुरा नासाग्र वाराणासीं।

एतद् ब्रह्मपदं वदन्ति मुनयोर्योध्यापुरी मस्तकम्।।

स्कन्दपुराणम् अयोध्या महात्म्य

भगवान विष्णु का चरणकमल उज्जैन है, शिवकांची और विष्णुकांची ये दोनों जंघा है, द्वारकापुरी नाभी है, हरिद्वार हृदय है, मथुरापुरी कंठ और वाराणासी नासिका है। इतने ब्रह्म पदों कि वर्णन करते हुए मुनियों ने परब्रह्मस्वरूप अयोध्या पुरी को भगवान विष्णु का मस्तक बताया है।

कीदृशी सा सदा मेध्याऽयोध्या विष्णु प्रियापुरी।

आद्या सा गीयते वेद पुरीनां मुक्तिदायिका।।

स्कन्द पुराण अयोध्या महात्म्य

विष्णु का परम प्रिय स्थान अयोध्या जिसको वेद भी गाया है और जो मुक्तिदायिका है।

श्रीराम उवाचः-

मम् एकांशे जगत्येस्मिन् प्रतिगोलमवस्थिताः।

तत्तद्गुणाधिपतयो ब्रह्मविष्णुकपर्दिनः।।

स्कन्द पुराण रामगीता

श्री राम कहते हैंः- मेरे एक अंश भुत मात्र से इस जगत में रजस्, सत्व और तमस गुणों के अधिपति ब्रह्मा, विष्णु और महेश प्रत्येक ब्रह्माण्डों में स्थित हैं।

ब्रह्मा उवाचः-

नमः पुंसाय पुराणाय षड्विंशाय महात्मने।

उद्भवस्थितिसंहारमुलबीजाय तेजसे।।

स्कन्द पुराण रामगीता

ब्रह्मा जी कहते हैंः- हे श्रीराम ! आप ही छब्बीस तत्वों के रुप में विद्यमान हैं तथा महान आत्मबल सम्पन्न, जगत का सृष्टि, पालन और

संहार के मुल बीजस्वरुप है, आप ही पुराण पुरुष है, आप को नमस्कार है।

वैकुण्ठाः पंच विख्याताः क्षीराब्धिश्च रमाख्यकः ।

महाकारणवैकुण्ठौ पञ्चमो विरजापरः ॥

नित्यं दिव्यमनेकभोगविभवं वैकुण्ठरूपोत्तरं ।

सत्यानन्दचिदात्मकं स्वयम्भू मूलं त्वयोध्यापुरी ॥

Bhargav Puran khand 3 Ch. 2

वैकुंठ पांच प्रकार के हैं:- **क्षीरसागर वैकुंठ, रमा वैकुंठ, महावैकुंठ, गोलोक तथा अयोध्या उर्फ साकेत धाम।** ये सब विरजा नदी के उस पार है और नित्य , दिव्य है। पर इन सब वैकुंठों का मुल अयोध्या है।

अयोध्या न परं नाम्ना गुणेन अपि अरिभिः सुराः।

साकेतरुढिरप्यस्याः श्लोघ्यैव स्वैर्निकतनैः।।

आदि पुराण १२.१६

नाम और गुण में अयोध्या देवताओं और राक्षसों से भी परे है।यहां तक कि साकेता की सवारी की तारीफ उनके पड़ोसी भी करते हैं।

सर्व्व ऐश्वर्य गुणैर्व्वपि नयोध्यातः पृथग्मता।

अयोध्यका यथा नित्या सर्व्वमंगल रुपिणी।।

तथैव मिथिला सर्व्वे सर्व्वमंगल विग्रहा।

नित्यभुताः सदाशुद्धाः पुनरावृतिः वर्जिता।।

बृहद्विष्णु पुराण

जैसे अयोध्या सर्व एश्वर्यवान, नित्य, मंगल स्वरुप है ठीक वैसे ही मिथिला धाम भी सर्व ऐश्वर्यवती , नित्य, मंगलस्वरुपिणी है।

स यैः स्पृष्टोऽभिदृष्टो वा संविष्टोऽनुगतोऽपि वा ।

कोसलास्ते ययुः स्थानं यत्र गच्छन्ति योगिनः ॥ २२ ॥

श्रीमद्भागवत पुराण ९.११.२२

भगवान रामचन्द्र अपने निवास स्थान पर लौट आये, जहाँ भक्ति-योगियों को बढ़ावा दिया जाता है। यह वह स्थान है जहां अयोध्या के सभी निवासी भगवान की प्रकट लीलाओं में उन्हें प्रणाम करने, उनके चरण कमलों को छूने, उन्हें एक पिता तुल्य राजा के रूप में देखने,

उनके साथ बराबर की तरह बैठने या लेटने, या यहां तक कि उनकी सेवा करने के बाद गए थे, वे सब श्रीरामलोक चले गए।

न यत्र कालोऽनिमिषां परः प्रभुः कुतो नु देवा जगतां य ईशिरे ।
न यत्र सत्त्वं न रजस्तमश्च न वै विकारो न महान् प्रधानम् ॥

SB 2.2.17

लब्धोपशांति की उस दिव्य अवस्था में, विनाशकारी समय की कोई सर्वोच्चता नहीं है, जो उन दिव्य देवताओं को भी नियंत्रित करता है जिन्हें सांसारिक प्राणियों पर शासन करने का अधिकार है। (और स्वयं देवताओं के बारे में क्या कहा जाए?) वहां न तो भौतिक सतोगुण है, न रजोगुण, न अज्ञान, न ही मिथ्या अहंकार, न ही भौतिक कारण महासागर, न ही भौतिक प्रकृति।

पादेषु सर्वभूतानि पुंसः स्थितिपदो विदुः ।
अमृतं क्षेममभयं त्रिमूर्ध्नोऽधायि मूर्धसु ॥

ŚB 2.6.19

भगवान के परम व्यक्तित्व को उनकी ऊर्जा के एक चौथाई भाग (एक पाद)द्वारा सभी भौतिक ऐश्वर्यों के सर्वोच्च भंडार के रूप में जाना जाता है, जिसमें सभी जीव विद्यमान हैं। मृत्युहीनता, निर्भयता और बुढ़ापे

और बीमारी की चिंताओं से मुक्ति भगवान के राज्य में मौजूद है, जो तीन उच्च ग्रह प्रणालियों और भौतिक आवरणों से परे है।

मर्त्यो मृत्युव्यालभीतः पलायन् लोकान् सर्वान्निर्भयं नाध्यगच्छत्।

त्वत्पादाब्जं प्राप्य यदृच्छयाद्य सुस्थः शेते मृत्युरस्मादपैति॥

ŚB 10.3.27

इस भौतिक संसार में कोई भी विभिन्न ग्रहों पर पलायन करके भी चार सिद्धांतों जन्म, मृत्यु, बुढ़ापा और बीमारी से मुक्त नहीं हो सका है। लेकिन अब जब आप प्रकट हो गए हैं, तो मृत्यु आपके डर से भाग रही है, और जीव, आपकी दया से आपके चरण कमलों में आश्रय प्राप्त करके, पूर्ण मानसिक शांति में सो रहे हैं

तद् वै पदं भगवतः परमस्य पुंसो ब्रह्मेति यद् विदुरजस्रसुखं विशोकम् ॥

सध्रयङ् नियम्य यतयो यमकर्तहेतिं ।जह्युः स्वराडिव निपानखनित्रमिन्द्रः ॥

ŚB 2.7.47-48

पूर्ण ब्रह्म के रूप में जो महसूस किया जाता है वह दुःख के बिना असीमित आनंद से भरा होता है। वह निश्चित रूप से परम भोक्ता, भगवान के व्यक्तित्व का अंतिम चरण है। वह सदैव सभी उपद्रवों से रहित और निर्भय है। ऐसी दिव्य अवस्था में मन के कृत्रिम नियंत्रण, मानसिक चिंतन या ध्यान की कोई आवश्यकता नहीं है, जैसा कि

ज्ञानियों और योगियों द्वारा किया जाता है। व्यक्ति ऐसी प्रक्रियाओं को त्याग देता है, जैसे स्वर्ग के राजा इंद्र कुआँ खोदने की परेशानी को त्याग देते हैं।

तस्मै स्वलोकं भगवान् सभाजितः सन्दर्शयामास परं न यत्परम् ।
व्यपेतसंक्लेशविमोहसाध्वसं स्वदृष्टवद्भिर्पुरुषैरभिष्टुतम् ॥
प्रवर्तते यत्र रजस्तमस्तयोः सत्त्वं च मिश्रं न च कालविक्रमः ।
न यत्र माया किमुतापरे हरे-रनुव्रता यत्र सुरासुरार्चिताः ॥

ŚB 2.9.9-10

इस प्रकार अत्यंत संतुष्ट होकर भगवान श्रीराम अपने निजी निवास, त्रिपाद विभूति, अन्य सभी से ऊपर सर्वोच्च ग्रह, को प्रकट करने के लिए प्रसन्न हुए। भगवान के इस दिव्य निवास की आराधना सभी प्रकार के दुखों और माया के भय से मुक्त सभी आत्म-साक्षात्कारी व्यक्तियों द्वारा की जाती है।भगवान के उस व्यक्तिगत निवास में, अज्ञान और रजोगुण के भौतिक गुण प्रबल नहीं होते हैं, न ही अच्छाई में उनका कोई प्रभाव होता है। समय के प्रभाव की कोई प्रबलता नहीं है, इसलिए मायावी, बाह्य ऊर्जा की तो बात ही क्या है; वह उस क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर सकता. बिना किसी भेदभाव के, देवता और राक्षस दोनों ही भक्त के रूप में भगवान की पूजा करते हैं।

From Ramayanas and Mahabharata

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च।

रामो राज्यम् उपासित्वा ब्रह्मलोकं प्रयास्यति।।

मुल रामायण ९७

ब्रह्मा जी अपने मानस पुत्र नारद से कहते हैं:- मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ग्यारह सह्रस्र वर्षों तक राज्य करने के उपरान्त **ब्रह्मलोक अर्थात साकेत लोक** के लिए प्रस्थान करेंगे।

नोच्छ्वसत् तदयोध्यायां सुसुक्ष्ममपि दृश्यते।

तिर्यग्योनिगताश्चैव सर्वे राममनुव्रता।।

श्रीमद्वाल्मीकि रामायण ७.१०९.२२

उस समय उस अयोध्या में सांस लेने वाला कोई छोटे से छोटा प्राणी भी रह गया हो, ऐसा नहीं देखा जाता था। तिर्यग्योनि के समस्त जीव श्रीराम में भक्ति भाव रखकर उनके पीछे चले जा रहे थे।

वैष्णवीं तां महातेजो यद्वाऽऽकाशं सनातनम्।

त्वं हि लोकगतिर्देव न त्वां केचित् प्रजानते।।

श्रीमद्वाल्मीकि रामायण ७.११०.१०

ब्रह्मा जी का वचन :- हे महातेजस्वी परमेश्वर! आपकी इच्छा हो तो चतुर्भुज विष्णु रुप में ही प्रवेश करें या फिर अपने सनातन आकाशमय (परम व्योम/त्रिपाद् विभुति जिसको वेदों में नित्य चिन्मय आकाश बोला गया है) अव्यक्त ब्रह्मरुप में ही विराजमान हों।

लोकान् सान्तानिकान् नामयास्यान्तीमे समागताः।।
यत् च तिरृयग्गतं किंचित् त्वामेवमनुचिन्तयत्।
प्राणांस्त्यक्ष्यति भक्त्या तत् संतानेषु निवत्स्यति।।
सर्वैर्ब्रह्मागुणैर्युक्ते ब्रह्मलोकाद् अनन्तरे।

श्रीमद्वाल्मीकि रामायण ७.११०.१८ख & १९

ब्रह्मा जी बोले:- यहां आए हुए ये सब लोग "संतानक" नामक लोक को जाएंगे। पशु पक्षियों की योनि में पड़ें हुए जीवों में से जो कोई आपका भी भक्तिभाव से चिन्तन करता हुआ प्राणों का परित्याग करेगा, वह भी संतानक लोकों में ही निवास करेगा। यह संतानक लोक ही साकेत धाम के अन्दर है। वह ब्रह्म के सत्य संकल्प आदि सभी गुणों से युक्त है।

परम् ब्रह्म स्वयं रामः सच्चिदानन्द विग्रहः।

यस्य लोकः सदा भाति गोलोकात् परतस्तु ते।।

श्रीमदादि रामायण पुर्वखंड

श्रीराम स्वयं भगवान परंब्रह्म सच्चिदानन्दाव्ययम् है जिनका साकेत धाम गोलोक से भी ऊपर है।

गोलोकात् च परं ज्ञेयं साकेतान्तः पुरं प्रियम्।

गोप्याद् गोप्यतरागोप्या सा अयोध्यातीव दुर्लभा।।

महारामायण

साकेत धाम , गोलोक से भी परे प्रभु श्रीराम का अत्यन्त प्रिय धाम है जो परम गुप्त से भी गुप्त और अत्यन्त दुर्लभ धाम है।

विष्णोराद्या पुरी सत्या तस्या महात्म्यम् इदृशम्।

सत्योपख्यान ३४.२२

अयोध्या विष्णु का आदि पुरी है।

सत्या च विमला चैव पुरी आद्या प्रकीर्तिताः।

अयोध्या नाम विख्याता वेदे लोके तथैव च।।

सत्योपख्यान ७१.३

वेद और लोक मे अयोध्या को सत्या, विमला नाम से विख्यात है।

रामप्रिया पुरी चाद्या विबुधैः सेविता च सा।

वशिष्ठवामदेवाद्यैः मुनि वृन्दैः रुपासिता।

इद्दशी विमला द्दष्टा पुरी चाद्या महामते।।

सत्योपख्यान पुर्वार्द्ध ३४.४-५

श्रीराम का प्रिय और आदि नगरी अयोध्या वशिष्ठ, वामदेव आदि मुनियों के द्वारा पुजित है, इसी धाम को विमला और आद्या पुरी भी कहते है।

अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पुरूदाहृता।

तस्यां हिरण्यमयः कोशः सुगुप्तो ज्योतिषावृतः।।

इति एतद् वेदमंत्रेषु रहस्यं प्रतिपादितम्।

श्रीमद्कौशिक रामायण

श्री कौशिक जी कहते हैं:-वेद मे "अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पुरयोध्या" ऐसा मंत्र और उसमे ज्योति से यह भी उक्त मंत्र मे वर्णित है।वेद मंत्र मे यह रहस्य वर्णित है।

अष्टाचक्राप्तदुर्गेण महार्हेण सुशोभिता।

नवद्वारवती दिव्या रत्नकोशसमुज्जवला।।

श्रीमद्कौशिक रामायण

अयोध्या नगरी ही बहुत दिव्य आठ चक्रों से युक्त किला सुशोभित है। नव संख्यक /नुतन गोपुरों से संयुक्त है, नाना रत्नों से भरे कोश से यह देदीप्यमान है।

न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः ।

यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ।।

गीता १५.६

जिस परमपद को प्राप्त होकर मनुष्य लौटकर संसार में नहीं आते, उस स्वयं प्रकाश परमपद को न सूर्य[१] प्रकाशित कर सकता है, न चन्द्रमा[२] और न अग्नि[३] ही; वही मेरा परमधाम है ।।

लोकान् सान्तानिकान् नाम भविष्यन्ति यस्य भारत्।

यतिधर्ममवाप्तोऽसौ नैव शोच्य परंतपः।।

महाभारत

जिस समय विदुर जी का देहांत हो गया तब युधिष्ठिर दग्ध करने चले तब उस समय आकाशवाणी हुआ:-

इनका तो योगियों के लिए भी दुर्लभ सर्वोपरि सान्तानिक लोक मे होगा क्योंकि संन्यास धर्म को प्राप्त रहा।इससे दग्ध मत करो, क्योंकि यति का दग्ध करना दोष है और शौच भी मत करो।

@MAHAKAALNYTIN
AYODHYA SHRI RAM MANDIR
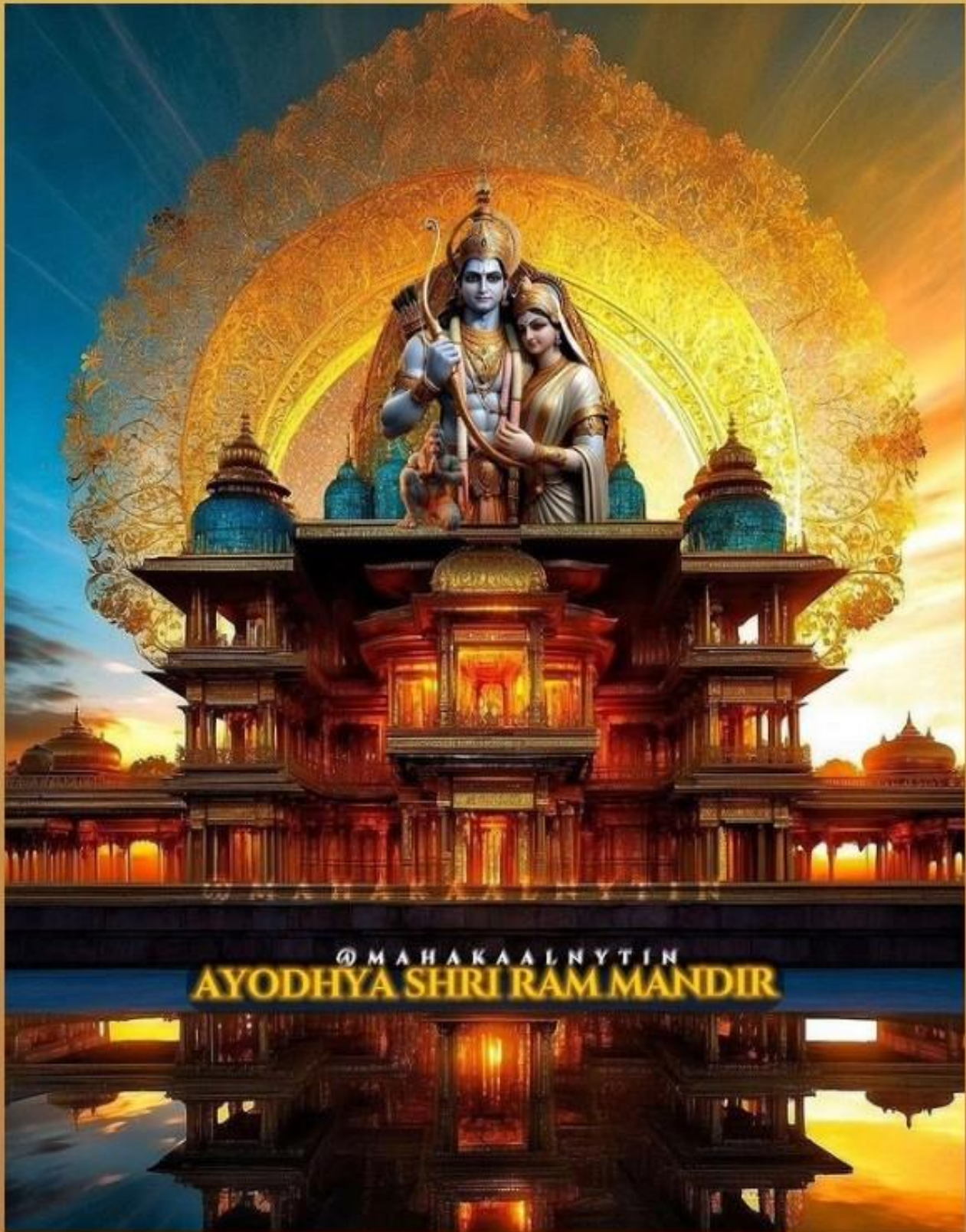
From tantras and samhitas

कीदृशी सा सदा मेध्याऽयोध्या विष्णु प्रियापुरी।

आद्या सा गीयते वेद पुरीनां मुक्तिदायिका।।

रूद्रयामल तंत्र अयोध्या महात्म्य १.६

विष्णु का परम प्रिय स्थान अयोध्या जिसको वेद भी गाया है और जो मुक्तिदायिका है।

अकारो वासुदेवः स्याद् यकारो प्रजापतिः।

उकारो रुद्ररुपस्तु तां ध्यायन्ति मुनीश्वराः।।

रूद्रयामल तंत्र अयोध्या महात्म्य तथा स्कन्द पुराण अयोध्या महात्म्य

अकार वासुदेव का वाचक है, य कार ब्रह्मा का और उकार रुद्र का वाचक है।इन तीनों का श्रेष्ठ मउनइगण जिस स्थल पर ध्यान करते हैं वहीं अयोध्या है।

विष्णोराद्या पुरी चेयं क्षितिं न स्पृशति प्रिये।

रुद्रयामल तंत्र अयोध्या महात्म्य 1.63

यह आदि विष्णु श्रीराम की पुरी अयोध्या कभी भी धरती को नहीं स्पर्श करती है।

विष्णोः सुदर्शने चक्रे स्थिता पुण्यांकुरा सदा।

केन वर्णयितुं शक्यो महिमास्याः बुद्धिनाथ।।

रूद्रयामल तंत्र अयोध्या महात्म्य १.६४

महाविष्णु के सुदर्शन चक्र पर अयोध्या पुरी स्थित है। इसमे पुण्य रुप अंकुर ही सदा उगते हैं। ऐसा कौन बुद्धिमान व्यक्ति है जो इस पुरी की महिमा वर्णन कर सकता है।

विष्णोः पादम् अवंतिकां गुणवतीं मध्यं च कांचींपुरीं

नाभिं द्वारवतीं पठंति हृदयं मायापुरी योगिनः।।

ग्रीवमुलमुदाहरंति मथुरां नासां च वाराणासीं

एतद् ब्रह्मपदं वदन्ति मुनयोर्योध्यापुरीं मस्तकम्।।

रूद्रयामल तंत्र अयोध्या महात्म्य २.५८

भगवान विष्णु का चरणकमल उज्जैन है, शिवकांची और विष्णुकांची ये दोनों जंघा है, द्वारकापुरी नाभी है, हरिद्वार हृदय है, मथुरापुरी कंठ और वाराणासी नासिका है। इतने ब्रह्म पदों कि वर्णन करते हुए मुनियों ने परब्रह्मस्वरूप अयोध्या पुरी को भगवान विष्णु का मस्तक बताया है।

तथैव क्षेत्रतीर्थानाम् अयोध्या त्वादिरुच्यते।।

रुद्रयामल तंत्र अयोध्या महात्म्य २.६०

समस्त तीर्थक्षेत्र का आदिकारण अयोध्या है।

अयोध्या च परं ब्रह्म सरयु सगुणः पुमान्।

तन् निवासी जगन्नाथः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

रूद्रयामल तंत्र अयोध्या महात्म्य २.६७

अयोध्या पुरी तो परंब्रह्म है और सरयु तीर्थ साकार जलाकर परमात्मा है। उस अयोध्या के निवासी समस्त जीव जगन्नाथ स्वरुप है। मैं सत्य कह रहा हूं।मैं सत्य कह रहा हूं।

ययौ तथा महाशंभु रामलोक गोचरम्।

तत्र गत्वा महाशंभु नित्यविग्रहम्।।

ददर्श परमात्मनं समासीनं मया सह।

सर्वशक्तिकलानाथं द्विभुजं रघुनन्दनम्।।

द्विभुजाद् राघवान् नित्यात् सर्वम् एतत् प्रवर्तते।।

सुन्दरी तंत्र

महाशंभु साकेत लोक में चले गए जो इंद्रियों से परे है । जब वह वहां पहुंचे तो उन्होंने देखा कि शाश्वत राघव देवी सीता के साथ आसन पर बैठे हैं। श्री राम जो सभी शक्ति और कला के देवता हैं। संपूर्ण ब्रह्मांड श्री राम की अनंत दो भुजाओं से सक्रिय है।

गोलोक संज्ञके नित्य साकेतभवनोत्तमे।

भ्रातृभिरनु जैर्भाति देवदेव सनातनः।।

महासुंदरी तंत्र

गोलोक कहे जाने वाले धाम मे सब भवनों में सबसे उत्तम साकेत भुवन जो कि गोलोक के पुरे मध्य में स्थित वहां भगवानों के भी सनातन भगवान श्रीराम अपने भाईयों के सहित निवास करते हैं।

सीता च सुंदरी यत्र सर्वलीलाधिदेवता।

चित्रकूटाद्रिके रम्ये यद् वृन्दावनम् अद्भुतम्।।

Shuka samhita

श्री जानकीदेवी महासूंदरी ही सर्व लीला की अधिदेवी हैं और जहां चित्रकूट पर्वत में है जो आश्रयमय है वही से संपुर्ण गोलोक (वृन्दावन धाम,) दिख पड़ता है।

गोलोकोऽयं से एवात्र द्दश्यते पुरस्तथा।

सीताऽऽभिलापसंभुत्यै श्रीरामेण विनिर्मितः।

Shuka samhita

माँ सीता की इच्छा पूरी करने के लिए ही श्री राम द्वारा उच्च लोक "गोलोक" का निर्माण किया गया है जहाँ सर्वेश्वरी सीता महारानी और सर्वेश्वर श्री राम खेल के समय में लगे हुए हैं।

अविनश्वरम् एव एकम् अयोध्या पुरम् अद्भुतम्।

तत्रेव रमते नाथ आनन्दरस प्लावितः।।

शुक संहिता

हे भगवान श्रीराम! अयोध्या एक अद्भुत नगरी है जो अविनाशी है, यह आनंद के रस से भरा हुआ है।

गोलोक मण्डले रम्ये सन्तानक वनान्तर।

सखिभिः कोटिभियुक्ता रत्नसिहंसनस्थितम्।।

कोटि सुर्यप्रतिकाशां सच्चिदानन्द विग्रहान्।

परिपुर्णतमां शक्ति प्रभामण्डलं मण्डिताम्।

जानकी त्रैलोक्यविजय कवचम्, ब्रह्मा संहिता

गोलोक के मध्य में, माँ सीता सनातनक वन में निवास करती हैं और हजारों सखियों से घिरी हुई रहती हैं। वह सर्वोच्च देवी के रूप में अनेक रत्नों से परिपूर्ण सिंहासन पर विराजमान हैं। सीता परिपूर्णतम शक्ति है।

साकेतपश्चिमे पार्श्वे गोलोकाख्ये मनोरमे।

महाकल्पतरुद्यानां मथुरेति पुरी मता।।

बृहद् ब्रह्मा संहिता ३.१.१२०

साकेत के पश्चिम में गोलोक नामक सुन्दर स्थान है। मथुरा को महान कल्प वृक्ष उद्यानों का शहर माना जाता है।

साकेते पुरद्वारे सरयुकेलिकारिणी।

कोटिगन्धर्वकन्याभिरालिभिर्भाति भामिनी।।

तत्र सान्तानिक नाम वनं दिव्यं मम् प्रियम्।

यत्र सीताभिधा लक्ष्मीर्वितनोति सदोत्सवम्।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत बृहद् ब्रह्मा संहिता

साकेत लोक में सरयुनदी बहती है जहां सान्तानिक नाम वनं में भगवती सीता न्विास करती हैं।

तस्मिन्साकेतलोके विधिहरहरिभिः सन्ततं ,

सेव्यमाने दिव्ये सिंहासने स्वे जनकतनयया राघवः शोभमानः।

युक्तो मत्स्यैरनेकैः करिभिरपि तथा नारसिंहैरनन्तैः

कूर्मैः श्रीनन्दनन्दैर्हयगलहरिभिर्नित्यमाज्ञोन्मुखैश्च ॥

यज्ञः केशववामनौ नरवरो नारायणो धर्मजः

श्रीकृष्णो हलधृक् तथा मधुरिपुः श्रीवासुदेवोऽपरः ।

एते नैकविधा महेन्द्रविधयो दुर्गादयः कोटिशः

श्रीरामस्य पुरो निदेशसुमुखा नित्यास्तदीये पदे ॥

इत्यादीनि बृहद्ब्रह्मसंहितावचनानि सङ्गच्छन्ते ।

अत्र नन्दनन्दनशब्दः नन्दं नन्दयति विविधोक्त्या

शोकत्याजनाद्वर्धयतीति मथुरानिवासिपरः ।

श्रीकृष्णशब्दो द्वारकानिवासिपर इति न विरोधः ।

Narad Pancharatra antargat Brihad Brahma samhita quoted in ramayan shiromani tika

~ राघव (श्री राम) साकेत (अयोध्या) की दुनिया में दिव्य सिंहासन पर सीता के साथ चमकते हैं जहां ब्रह्मा, शिव और विष्णु लगातार उनकी पूजा करते हैं। वह (भगवान राम) कई दिव्य मत्स्य अवतारों, बंदरों और प्रचुर मात्रा में नरसिम्हा या नरसिम्हा अवतारों, कुर्म अवतारों और श्री नंद के पुत्रों, यानी श्री कृष्ण, हया, गाला और हरि से घिरे हुए हैं। वे सभी भगवान राम का आदेश प्राप्त करने के लिए उत्सुक हैं। केशव, वामन आदि पुरुष, नारायण, युधिष्ठिर, श्री कृष्ण, हलाध्रिक बलराम और वासुदेव, राक्षस मधु के शत्रु, साथ ही विभिन्न प्रकार के महेंद्र और लाखों देवी दुर्गा, हमेशा श्री राम (श्री राम) के सामने रहते हैं, उनका पैर कू सामने खड़े रहते हैं। यहां, नंद-नंदन विशेषण भगवान कृष्ण के उस रूप को दर्शाता है, जो नंद को प्रसन्न करते हैं और मथुरा में रहते हैं, जबकि श्री कृष्ण उस व्यक्ति को संदर्भित करते हैं जो द्वारिका में रहते हैं।

साकेत पश्चिम द्वारे वृन्दावनं दुरतः।

- वशिष्ठ संहिता

साकेत लोक के पश्चिमी द्वार पर वृन्दावन है

अयोध्या पश्चिम भागे कृष्णस्य परमात्मनः।

नित्यं वृन्दावनं धाम चिन्मयानन्दम् अद्भुत इति।।

सदाशिव संहिता

अयोध्या के पश्चिमी भाग में परमात्मा कृष्ण का निवास शाश्वत वृन्दावन है जो चिन्मय और अद्भुत है।

वरेण्या सर्वलोकानां हिरण्मयचिन्मया जया ।

अयोध्या नन्दिनी सत्या राजिता अपराजिता ॥

कल्याणी राजधानी या त्रिपादस्य निराश्रया ।

गोलोकहृदयस्था च संस्था सा साकेतपुरी ॥

(वशिष्ट संहिता)

अयोध्या मुख्य 8 नामों से जानी जाती है, हिरण्या, चिन्मया, जया, अयोध्या, नन्दिनी, सत्या, राजिता और अपराजिता नित्य स्मरणीय हैं। त्रिपाद की कल्याणमयी राजधानी अयोध्या जो किसी के आश्रित नहीं है, गोलोक के हृदय में बसी हुई वह दिव्य पुरी साकेत है।

विरजायाः परे पारे वैकुंठ यत्परं पदम्।

तस्माद् उपरि गोलोक सच्चिदानन्द्रिय गोचरम्।

तन्मध्ये रामधाम अस्ति साकेत यत्परात्परम्।

Vashisht samhita

भौतिक लोकों से परे विरजा नदी के उस पार, “वैकुंठ लोक (क्षीरसागर वैकुंठ, रमा वैकुंठ तथा महावैकुंठ)” है और उससे परे “गोलोक” स्थित है और गोलोक के मध्य में “साकेत” लोक है।

अयोध्या नगरी नित्या सच्चिदानन्दस्वरुपिणी।

यस्यांशांशेन् वैकुंठो गोलोकादि प्रतिष्ठितः।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत वशिष्ठ संहिता

अयोध्या नित्य सच्चिदानन्द-स्वरूपिणी है जिसके अंशआंश के द्वारा वैकुंठ, गोलोक आदि प्रतिष्ठित है।

प्राकृतेश्चक्षुभिः नैव दृश्यते सा कथंचन्।

देहत्रय विनिर्मुक्ता रामभक्ति प्रभावतः।

तुरीय सच्चिदानन्दरुपाः पश्यन्ति तां पुरीम्।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत वशिष्ठ संहिता

प्राकृत चक्षुओं से उसे कभी देखा नहीं जा सकता। स्थुल सुक्ष्म कारण तीनों देह से मुक्त श्रीराम भक्ति के अतुल प्रभाव से सच्चिदानन्द स्वरूप जीव ही उस दिव्य धाम को देख सकता है।

तदूर्ध्व सर्वसत्वनां कार्यकारणमानिनां ।

निलयं परमदिव्यं महावैष्णव संज्ञकम् ॥

एतद् गुह्यं समास्थानं ददातु वाञ्छितं हि नः।

(सदाशिव संहिता)

“भौतिक (भौतिक) ब्रह्मांड से परे, आध्यात्मिक स्थान है जिसमें सभी निवास शुद्ध-सत्व से बने हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में, ‘महा-वैष्णव’ नाम का एक दिव्य निवास है, जो महान ‘महा-विष्णु’ का निवास है। इस रहस्यमय उच्च लोक में व्यक्ति को सभी वांछित फल मिलते हैं।

तदूर्ध्व तु परकान्त महावैकुण्ठ संज्ञिकम् ।

वसुदेवादयस्तत्र विहरंती स्व मायया ॥

(सदाशिव संहिता)

“महा-शंभु-लोक के ऊपर, भगवान विष्णु का सर्वोच्च दिव्य निवास है जिसे ‘महा-वैकुंठ’ के नाम से जाना जाता है जहां भगवान वासुदेव (विष्णु) [और अन्य व्यूह और विभिन्न अवतार] आदि अपनी अंतर्निहित शक्ति के साथ वहां रहते हैं।“

तदूर्ध्व तू स्वयं भाति गोलोकः प्रकृतेः परः।

वाङ्मनोगोचरातितो ज्योतिरुपः सनातनः ॥

(सदाशिव संहिता)

महा-वैकुंठ के ऊपर, परम दिव्य शाश्वत निवास है, जो शाश्वत रूप से स्वयं प्रकाशित है, दिव्य प्रकाश का बहुत ही रूप है, अत्यधिक देदीप्यमान है, जिसे 'गोलोक' के नाम से जाना जाता है जो इंद्रियों की पहुंच से पूरी तरह से परे है और शब्दों में अव्यक्त है।

तस्यमध्ये पुरं दिव्यम साकेतमिति संज्ञकम् योषिद्रत्न मणिस्तभ प्रमदागण सेवितं ॥

(सदाशिव संहिता)

"गोलोक' के केंद्र में, एक सर्वोच्च दिव्य लोक है जिसे 'साकेत' (श्री साकेत-लोक) के नाम से जाना जाता है, जो दीप्तिमान रत्नों से सुशोभित है और विभिन्न आभूषणों से सुसज्जित दिव्य युवतियों (सदा युवतियों) द्वारा परोसा जाता है।"

पश्चिमां पाति धर्मात्मा राक्षसेन्द्रो हरिप्रियः।

पुर्वमावृत्य विश्वात्मा सुग्रीवस्तेजसात्मकः।।

उत्तरं रक्षति वीरो बालिपुत्रो मम् प्रियः।

दक्षिणं तु सदा पाति हनुमान् रामवत्सलः।।

सदाशिव संहिता

Four direction keepers of saket loka

East, पुर्वः- sugriv

South दक्षिण hanuman

West पश्चिम Vibhishan

North उत्तर angad

साकेतदक्षिण द्वारे हनुमान रामवत्सलः।
यत्र सान्तानिक नाम वनं दिव्यं हरेः प्रियम्।।
सदाशिव संहिता

साकेतपुरी के दक्षिण द्वार पर रामभक्त अग्रगण्य हनुमान जी रहते हैं जहां भगवान श्री राम का अति प्रिय धाम सान्तानिक वन है।

अवतारैः असंख्यातैः प्रधानैः दशभिस्तथा।
वेदैः सांगोपनिषदैः यज्ञैः बहुविधैरपि।
सेव्यमाने परे रम्ये गुणावासे परं पदे।।
सदाशिव संहिता

असंख्य भगवद् अवतारों से, दश प्रधान अवतारों से, समस्त वेदों, समस्त वेदांगो से, समस्त उपनिषदो से, बहुत तरीके के यज्ञाधिको से सेव्यमान परम रम्य गुणसागर परम पद श्रीसाकेत धाम में श्रीसीताराम सरकार का सेवा करते हैं।

संगीयमानं विनयाद्वाल्मीकिनांतरात्मना ।

मत्स्य कुर्म वराहैश्च नृसिंह हरि वामनेः ॥ ५ ॥

भार्गवहलिकंसारि बुद्ध कल्किभिरुद्यतः ।

उपास्यमानं देवेशं देवानां प्रवरंविभुम् ॥ ६ ॥

(-Sri Sada Shiva Saṃhitā)

यहां तक कि श्री वाल्मिकी ने भी भगवान राम को सर्वोच्च वास्तविकता के रूप में गाया है। मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिम्हा, हरि, वामन, परशुराम, बलराम और भगवान कृष्ण के अवतार सभी सर्वव्यापी सर्वोच्च ब्रह्म, श्री राम की पूजा करते हैं।

श्रीनारद उवाचः—

साकेत अहं सतोत्पन्नो हंसो ज्ञानेन सागरः।

कुमार बोधयामास विज्ञानार्थं सुनिश्चितम्।।

श्रीसाकेतनिवासिनां कुमारेभ्यः सदा मुने।

सनकाद्या समुद्भुता वेदवेदांगपारंगा।।

श्रीसाकेतस्थविप्रेण वामनेन सहस्त्रशः।

वामनाख्यावतारस्तु संभवति युगे युगे।।

विमला नरसिंहाभ्याम् नृसिहो जायते।

स्वभक्तरक्षणार्थाय कल्पे कल्पे न संशयः।।

श्रीकृष्णाद्यावतराणां संख्या कर्तु न शक्यते।

धर्मसंस्थापानर्थाय संभवति युगे युगे।।

(~agastya samhita)

साकेत लोक में, हंस अवतार ज्ञान से भरे हुए थे और कुमार अवतार (सनक कुमार, सनातन कुमार, सनंदन कुमार और सनत कुमार) ज्ञान सीखने के लिए थे। ये कुमार भाई वेद और वेदांगों में बहुत अच्छे थे। साकेत लोक में हजारों नरसिंह अवतार हैं जो हर कल्प में अपने भक्तों की रक्षा के लिए धरती पर उतरते हैं। श्रीकृष्ण, दत्तात्रेय, हयग्रीव, आदि जैसे कई अवतार हैं जिन्हें गिना नहीं जा सकता है और ऋषियों और ऋषियों की रक्षा के लिए और प्रत्येक युग में धर्म की स्थापना के लिए पृथ्वी पर अवतरित होते हैं।

द्विभुजौ द्विपद द्वि नेत्रे वक्त्रमेकन्तु मन्यताम् ।

अन्यथा कथनेन चैव वरस्यापि चिदात्मनि ॥

चिद्रूपं परमोदारं जीवेशयोः सनातनम् ।

द्विभुजं मधुरं भूत्वा कारणरूप मेव च ॥

दोर्दण्ड चण्ड कोदण्ड शरचण्डं महाभुजम् ।
कन्दर्प कोटि लावण्यं रमणीयं मनोहरम् ॥

(Shiv Samhitā, 5th Patal, Chapter 4)

जीवात्मा भवबन्धन से छूट कर जब भगवद्धाम में पहुँचता है तब उसको अपने प्रभु के समान ही दिव्यरूप प्राप्त होता है, जो दो भुजा वाला, दो पांव वाला, दो नेत्र तथा एक मुखारविन्द वाला होता है। अन्यथा कथन से तो चिदात्मा परमात्मा के स्वरूप का भी भ्रमित ज्ञान हो सकता है जीव तथा ईश्वर का नित्य सनातन सच्चिदानन्द द्विभुज मधुर स्वरूप ही है, वही कारण का भी महाकारण है । अपनी प्रबल प्रतापी भुजाओं में प्रचण्ड कोदण्ड धारण किये हुए महान् भुजा वाले प्रभु का करोड़ों कामदेव से भी अधिक रूप लावण्य सम्पन्न परम रमणीय मनोहर स्वरूप है।

अयोध्या नंदनी सत्यनामा साकेत इत्यपि।
कोशला राजधानी च ब्रह्मपुराऽपराजिता।।
अष्टचक्रा नवद्वारा नगरी धर्मसंपदाम्।
दृष्टैव ज्ञाननेत्रेण ध्यातव्या सरयुस्तथा।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत शिव संहिता

अयोध्या, नंदनी,सत्यनामा, साकेत, कोशला, राजधानी, ब्रह्मपुर, अपराजिता- ये सब नाम अयोध्या के हैं। आठ चक्र नव द्वार वाला नगरी धर्मसंपदा से युक्त है ऐसा ज्ञान नेत्र देखकर ध्यान करना चाहिए ठीक वैसे ही सरयु नदी।

उभय ऐश्वर्यमान् नित्यो रामो दशरथात्मजः।

साकेत नित्य माधुर्येधाम्नि संराजते सदा।।

Narad pancharatra antargat Shiva samhita

दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र जिनमें नित्य ऐश्वर्य और नित्य माधुर्य है वे नित्य साकेत मे सदैव राज करते हैं।

भोग्स्थानपराऽयोध्या लीलास्थानं त्विदं भुवि ।

भोगलीलापति रामो निरकुंशविभुतिकः ॥

भोगस्थानानि यावन्ति लीलास्थानानि यानि च ।

तानि सर्व्वाणि तस्यैव पुरो व्याप्यानि सर्व्वशः ॥

नारद पंचरात्र अन्तर्गत शिव संहिता

“परा-अयोध्या नित्य भोग-स्थान (जहाँ भगवान क्रीड़ा करते हैं) है, जबकि पृथ्वी पर अयोध्या लीला-स्थान है (जहाँ भगवान विभिन्न अन्य लीलाएँ भी करते हैं), और भगवान श्री राम दोनों नित्य के सर्वोच्च-स्वतंत्र

भगवान हैं। -विभूति और लीला-विभूति। जो कुछ भी नित्य भोग-स्थान (परा-अयोध्या) में मौजूद है, वे सभी इस भौतिक संसार में अयोध्या में भी मौजूद हैं।

मत्स्यकूर्मो किरिर्नैको नारसिंहोऽप्यनेकधा ।

वैकुण्ठोऽपि हयग्रीवः हरिः केशव वामनौ ।।

यज्ञो नारायणो धर्मपुत्रो नरवरोऽपि च ।

देवकीनन्दनः कृष्णो वसुदेवो बलोऽपि च।।

पृश्निगर्भो मधून्माथी गोविन्दो माधवोऽपि च ।

वासुदेवो परोऽनन्तः सङ्कर्षण इरापतिः ।।

प्रद्युम्नोऽप्यनिरुद्धश्च व्यूहाः सर्वेऽपि सर्वदा ।

रामं सदोपतिष्ठन्ते रामादेशे व्यवस्थिताः ।।

एतैरन्यैश्च संसेव्यो रामनामा महेश्वरः ।

तेषामैश्वर्य दातृत्वाद्रामोऽपीशः निरीश्वरः ।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत शिव संहिता

मत्स्य, कुर्म, वाराह, नृसिंह तथा कृष्ण, वामन, वैकुंठ के अच्युत, चतुर्व्युह अर्थात प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, संकर्षण, श्वेतद्वीप पति विष्णु नारायण, संकर्षण, गणेश, हयग्रीव, गोविंद मुर्ति, अधोक्षज मुर्ति , माधव मुर्ति, हृषीकेश मुर्ति आदि ये सब भगवान श्री राम के आधीन हैं।इन सभी

देवी-देवताओं सहित श्री राम का नाम महेश्वर है। इन सभी संपत्तियों को प्रदान करने वाले मूल भगवान होने के नाते, श्रीराम स्वयं निरीश्वर हैं।

न यद् रविः भासयते न चन्द्रो नैव अनलः स्वप्रभया प्रदीप्तम्।
यत्र अंशिनो ब्रह्माहरीश्वराणां तथाऽखिलानां जगतां वसन्ति।।
तत्र अपि सत्याखिल लोकवन्द्या स्थानं परं रामम् उपाश्रितानाम्।
न विद्यते कश्चिद् उपाय एव विना एक भक्त्या यदवाप्तये च।।
याज्ञवल्क्य संहिता ३.१२.१५

वह जो न तो सूर्य, न चंद्रमा और न ही अग्नि अपने प्रकाश से चमकता है।जहां असंख्य ब्रह्मा, हरि,शिव और संपूर्ण ब्रह्मांड के स्वामी निवास करते हैं। वहाँ भी वास्तव में समस्त लोकों की आराधना का स्थान राम की शरण में आने वालों का सर्वोच्च स्थान (अर्थात साकेत /अयोध्या)है। एकमात्र भक्ति के अतिरिक्त इसकी प्राप्ति का अन्य कोई साधन नहीं है।

एक अंशेन जगत्सर्वं सृजति यवति लीयति।
त्रिपाद् तस्य देवस्य ह्यमृतं तत्वदर्शिनः।।
लोमेश संहिता

वह एक अंश से सम्पूर्ण जगत् की रचना करता है , उसका संचालन और उसका विलय कर देता है।त्रिपाद भगवान श्रीराम अमृत तत्व के द्रष्टा हैं।